वन के मार्ग में

कविता का सार / प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत काव्य 'वन के मार्ग में' 'तुलसी दास' जी द्वारा रचित है। सवैये में राम, सीता और लक्ष्मण जी के वनवास जाने की दशा का मार्मिक वर्णन किया गया है। जब ये तीनों अयोध्या नगर से वनवास के लिए निकलते हैं तो कुछ दूर जाकर सीता जी थक जाती हैं। उनके कोमल होठ सूख जाते हैं; परंतु फिर भी बड़े धैर्य के साथ वो राम तथा लक्षमण के साथ वन के मार्ग पर बढ़ती हैं। वे प्रभू श्री राम से पूछती हैं कि वह स्थान और कितनी दूर है जहाँ उन्हें कुटिया बनाकर रहना है। श्री राम को सीता जी की यह दशा देखकर अत्यंत दुख होता है।

सीता जी श्री राम से कहती हैं कि लक्षमण उनके लिए जल लेने गए हैं, अतः जब तक वे नहीं आते हैं तब तक किसी पेड़ की छाया में विश्राम कर लेना चाहिए। राम का शरीर पसीने से भरा हुआ है। तथा सीता के पाँव काँटों से भरे पड़े हैं। यह देखकर श्री राम भावुक हो जाते हैं और सीता के पाँव से काँटें निकालने लगते हैं। यह देखकर सीता जी की आँखों में आँसू आ जाते हैं।

कविता की भाषा / शैली -

(1) प्रस्तुत काव्य की रचना 'अवधी' भाषा में की गई है।

(2) 'धरि धीर', 'भरि भाल', 'करिहौं कित', 'अँखियाँ अति', 'चारु चलीं', 'परिखो पिय', 'पोंछि पसेउ', 'पायँ पखारिहौं', 'बौठि बिलंब', 'कंटक काढ़े', 'बारि बिलोचन बाढ़े' में एक ही वर्ण की आवृति एक से अधिक बार होने के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

सवैये का उद्देश्य -

वन की यात्रा के समय राम, लक्षमण और सीता की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया गया है। इतनी कठिनाईयों को झेलने पर भी उनका आपसी प्रेम कभी कम नहीं हुआ। राम के जीवन के विभिन्न पक्षों को प्ररस्तुत करना ही कविता का उद्देश्य है।

सवैये का संदेश -

कविता के माध्यम से प्रेम तथा आपसी मेल का संदेश दिया गया है। कठिन से कठिन समय में भी यदि परिवार में आपसी प्रेम हो तो दुःख की अनुभूति नहीं होती।